RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

'आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र का बाजार विश्लेषण'

दिलीप गुप्ता

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, आगरा (उ.प्र.)

मानव इतिहास में बाजार या मण्डी की भूमिका अति महत्वपूर्ण रही है। इसके बिना सभ्यता और संस्कृति के विकास की कल्पना भी नही की जा सकती है। विनिमय के परिणाम स्वरूप ही जीवनयापन की सभी वस्तुऐं सुलभ हो पाती है, जीवन स्तर भी ऊॅचा उठ जाता है। और उपभोग में विविधता आ जाती है।कल्पना कीजिए अतीत की जब मनुष्य अलग– अलग कबीलों में रहता था। उस काल में उसे अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये अपने आप पर निर्भर रहना पड़ता था। उत्पादन की उपलब्ध सुविधाओं की सीमितता तथा श्रम विभाजन के अभावआदि के कारण एक तो उत्पादन का स्तर बहुत नीचा था और दूसरे उत्पादन का क्षेत्र भी बहुत छोटा था।

भारत ग्रामीण अर्थव्यवथा का देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की 68.83 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है।ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार केन्द्र सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की धुरी कहे जाते है।

भातर में ग्रामीण बाजारों के अनेक रूप मिलते है। इनमें स्थाई, साप्ताहिक बाजार या अर्द्धसाप्ताहिक बाजार हाट या पैठ, चौराहों पर एवं सड़क के किनारें अव्यवस्थित दुकानों के रूप में लघु बाजार दृष्टिगत होता है। आगरा जनपद में दैनिक साप्ताहिक एवं अर्द्ध साप्ताहिक बाजार है जो ग्रामीण क्षेत्र की विपणन व्यवस्था को पूरा करते है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य आगरा जिले की बाह तहसील के पिनाहट विकासखण्ड के पिनाहट के ग्रामीण बाजार की स्थिति एवं बाजार की विशेषताऐं,दुकानों के प्रकार तथा प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र :–

आगरा जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी किनारे पर अवस्थित हैं।

यह ऊपरी गंगा मैदानी के दक्षिणी भाग का हिस्सा है। यह $26^0$44′ से $27^0$24′ उत्तरी अक्षांश तक और $77^0$28′ से $78^0$54′ पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है।

जनपद का क्षेत्रफल 4027 वर्ग किमी है।जो उत्तर प्रदेश राज्य का 1.3 प्रतिशत है। पिनाहट ग्रामीण बाजार आगरा जिले की वाह तहसील के पिनाहट विकास खण्ड में स्थित है। चम्बल नदी पिनाहट के दक्षिणी भाग से होकर गुजरती है।यह आगरा नगर से 55 किमी द0 पू0 में सड़क मार्ग पर अवस्थित है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

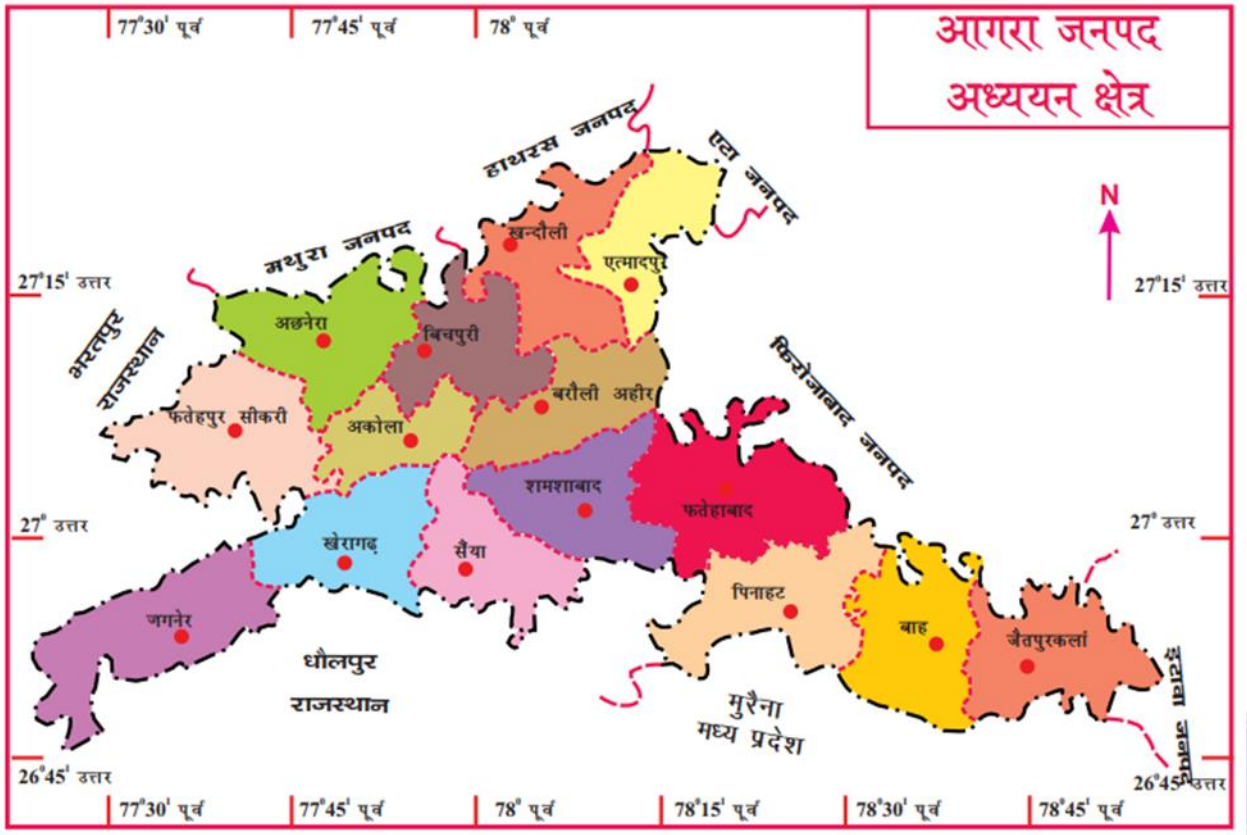

पिनाहट ग्रामीण बाजार विक्रेताओं की सामाजिक संरचना:–

पिनाहट एक दैनिक ग्रामीण बाजार एवं प्रमुख समृद्ध एवं बड़ा विपणन केन्द्र हैं। यहां पक्की एवं स्थायी दुकानों का बाहुल्य है जो प्रातः 8 बजे से रात 8 बजे तक खुलती है। यहॉ के विक्रेताओं में अधिकांश (90 प्रतिशत) मध्यम और निम्न मध्य पारिवारिक स्थिति से है। जिनमें लगभग सभी जाति वर्ग के विकेताओं का विपणन में योगदान रहता है। परन्तु दो मुख्य जातियों वैश्य एवं ब्राह्मण का व्यापार में विशेष योगदान रहता है। वैश्य और ब्राह्मणों का व्यापार में बीज एवं खाद की दुकानें, कपड़ों की दुकानें दैनिक उपयोग की वस्तुओं की दुकानें, हलवाई की दुकानें, आदि में सहयोग रहता है अन्य विक्रेताओं में सब्जी बेचने वाले, जाटव, कुर्मी, लोधी, जाट कुम्हार, मिट्टी के बर्तन एवं खिलौने बेचने वाले कुम्हार, नाई, धोबी, आदि अपने परम्परागत व्यवस्थाओं में संलग्न है।

पिनाहट ग्रामीण बाजार का स्वरूप एवं विशेषतायें:–

पिनाहट एवं दैनिक ग्रामीण बाजार है। यहॉ दुकानें रेखीय प्रतिरूप में सड़क के दोनों किनारों पर लगती है। पिनाहट एक अति वृहत् ग्रामीण बाजार है। यहॉ 64 प्रकार की 1277 दुकानें लगती है। इस बाजार में 65 प्रतिशत दुकानें पक्की और स्थायी है। स्थायी दुकानों में किराना, खाद्यान्न, दवाई, ब्यूटी पार्लर, फोटोस्टेट, किताबे, स्टेशनरी, कपड़ों, बीज व खाद, ओटोमोबाइल, हलवाई,हार्डवेयर स्टोर, स्टूड़ियो, स्टील, जौहरी, व पीतल, के बर्तन, साईकिल का सामान, व मरम्मत एवं अन्य सामान की दुकानें है।

अस्थायी दुकाने अधिकांशतः जमीन पर टाट बोरी बिछाकर या गुमटियों में लगाई जाती है। इनमें तम्बाकू, चाय, फल व सब्जी, चूड़ी, चाट– पकौड़ी, ताले, चाबी, जूते– चप्पल, खिलौने, प्लास्टिक का सामान, रेड़ीमेड कपड़े आदि की दुकानें मुख्य है।

पिनाहट ग्रामीण बाजार का प्रभाव क्षेत्र :–

बाजार का प्रभाव क्षेत्र एक ऐसा भौगोलिक प्रदेश है जहॉ से बाजार अपने ग्राहकों को आकर्षित करता है और फुटकर व्यापार और अन्य सेवायें प्रदान करता है। एच0 एम0 सक्सेना के शब्दों में 'बाजार का प्रभाव क्षेत्र उस केन्द्राधारित क्षेत्र को कहते है। जहॉ से क्रेता – विक्रेता वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय हेतु आते है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

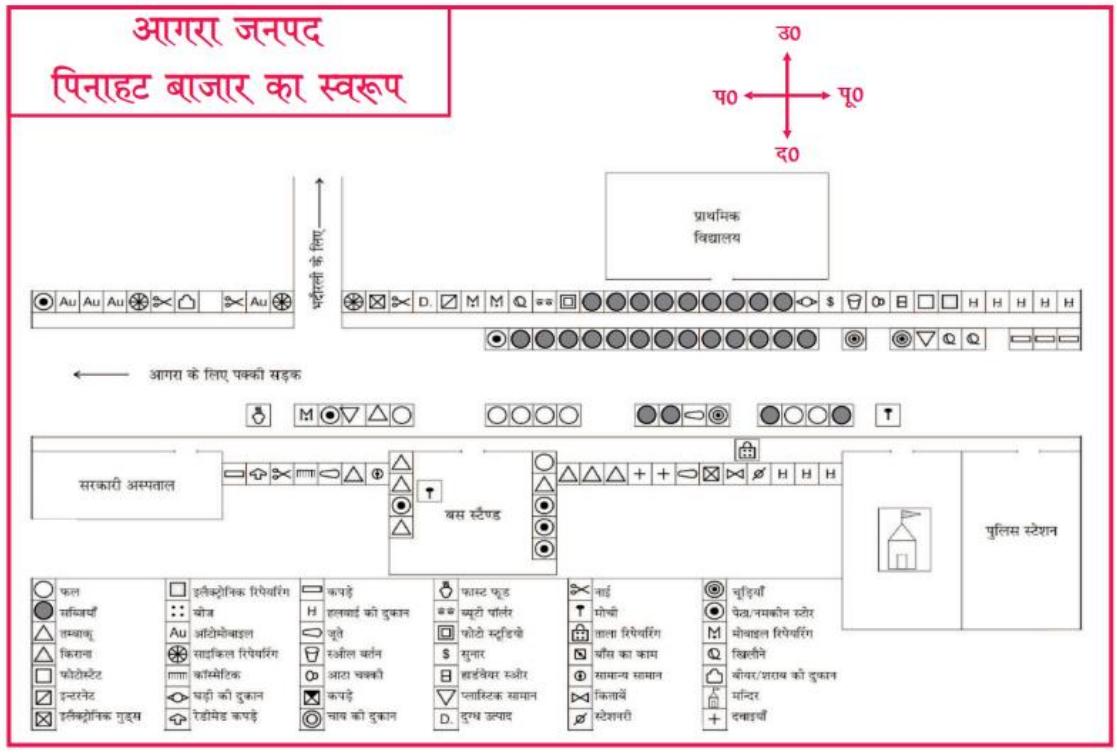

दूसरे शब्दों में कहे तो ग्रामीण बाजार अपने चतुर्दिक बसे क्षेत्र के गांव को अपनी सेवाओं से प्रभावित करता है। वह उस बाजार का प्रभाव क्षेत्र कहलाता है। इस प्रकार ग्रामीण बाजार का प्रभाव क्षेत्र उसके चारों ओर से सतत् रूप से फैला क्षेत्र होता है। यह क्षेत्र ग्रामीण बाजार से सामाजिक आर्थिक दृष्टि से सम्बद्ध होता है तथा ग्रामीण बाजार केन्द्र भी उस पर निर्भर होता है।

पिनाहट ग्रामीण बाजार का प्रभाव क्षेत्र 10 किमी0 में विस्तृत है जिसमें उमरेठा, विप्रावली, चचिहा, नंदलेल, सुताहरी, गजौरा, लडउवापुर, पुरा झोरियान, स्थायीपुरा, लालपुरा, अर्जुनपुरा, हुसैनपुरा, कुकथरी, उदयपुर – खालसा,सिवासार, बघरेना, उटसानी, छातोसीपुरा, क्योरी, आदि ग्राम है।

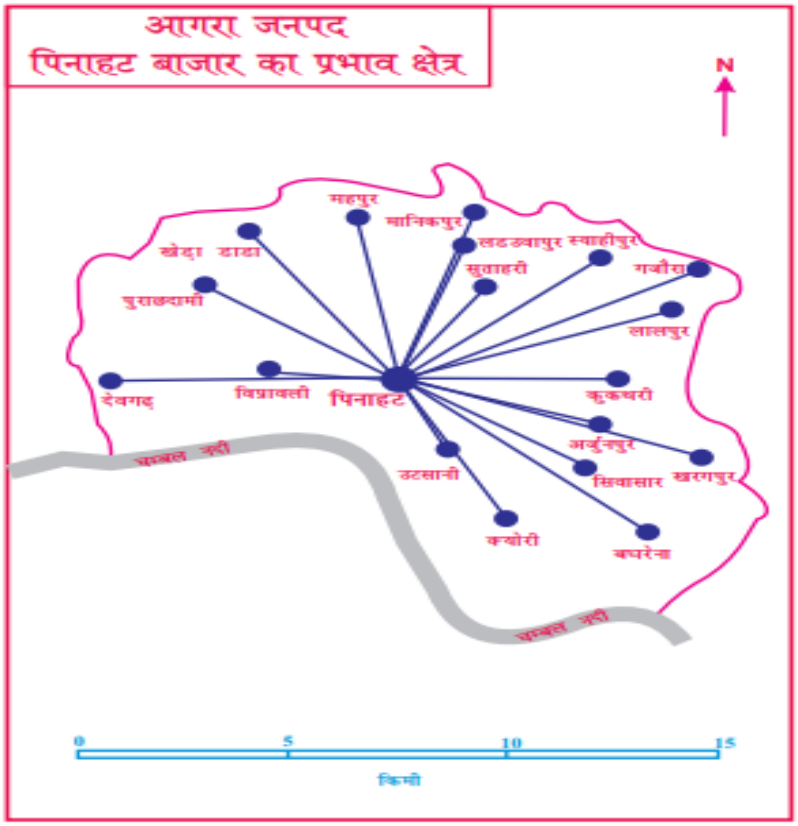

पिनाहट ग्रामीण बाजार पर ई– कॉमर्स कंपनियो का प्रभाव एवं भविष्य :–

वर्तमान युग ई – कॉमर्स का युग है। आज बड़ी– बडी कंपनियॉ जैसे फ्लिपकार्ट, अमेजॉन, आदि का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों के बाजारों पर भी पड़ रहा है। ये कंपनियॉ, ग्रामीण बाजारों को भी निशाना बना रही है। इन्टरनेट उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि के फलस्वरूप आज उपभोक्ता ई– प्लेटफार्म का प्रयोग वस्तुओं की खरीददारी के लिए बडे पैमाने पर कर रहे है। इससे ग्रामीण बाजारों में बेरोजगारी का संकट गहराने लगा है। कोरोना काल के बाद निश्चय ही ई– कॉमर्स कंपनियों ने ग्रामीण क्षेत्रो में अपने प्रभाव को बनाया है। इससे इस बाजार में छोटे विक्रेताओं के सामने बेरोजगारी की समस्या आने लगी है। विक्रेता बताते है कि अधिकतर इलेक्ट्रानिक सामान उपभोक्ता वस्तुओं रेड़ीमेड कपडें से लेकर अनेक वस्तुऐं ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पैठ बना रही है। यह परिदृश्य छोटे विक्रताओं के सामने रोजी रोटी का संकट खड़ा कर रहा है। अतः भविष्य में इस पर क्या फैसला किया जायेगा ये समय के गर्भ में है।

संदर्भ सूची

1. सिंघल, अमरचंद,1994,भारत में कृषि विपणन, ए0बी0ड़ी0 पब्लिशर्स जयपुर,पृष्ठ 8
2. Rigzin samphel, 2015,editor Gazetter of India, Uttar Pradesh, District Agra, Jan, Lucknow, pp167- 168
3. Saxena H. M, (1984): Geography of Marketing concept and methodology, sterling publishers Pvt. Ltd. New Delhi.
4. Dickinson, R. E.: 1932, The Distribution of Function of the Smaller Urban Centres of East Anglia, Geography, Vol VIII.

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)